एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 03 (मई-जून, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

अमरूद की उन्नत खेती बनी किसानों की आर्थिक मजबूती का आधार

डॉ. द्वारका[1], डॉ. आनन्द मिलन[2], डॉ. कृतिका नायक[3], डॉ. उषा[4], शोभाराम ठाकुर[5] एवं *निशा चढ़ार[6]

[1]अतिथि शिक्षक, कीट. वि., जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश

[2]अतिथि शिक्षक, पौधरोग वि., जवा. नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश

[3]अतिथि शिक्षक, सस्यविज्ञान, जवा. नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश

[4]गेस्ट फैकल्टी, उद्यानिकी महाविद्यालय, रहली, सागर (म.प्र.), जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर, (म.प्र.)

[5]वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एक्रिप परियोजना तिल फसल, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

[6]एम.एससी. (बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

*संवादी लेखक का ईमेल पता: chadarnisha63@gmail.com

खरगोन जिले के ग्राम इदारतपुरा के किसानों ने पारंपरिक खेती के साथ ''हाईब्रिड अमरूद की खेती'' अपनाकर कृषि क्षेत्र में एक नई मिसाल स्थापित की है। पहले यहां के किसान मुख्य रूप से चना, मिर्च, कपास तथा अन्य पारंपरिक फसलों की खेती करते थे, जिससे उन्हें सीमित उत्पादन और कम आय प्राप्त होती थी। वर्ष ''2018–19'' में गांव के कुछ प्रगतिशील किसानों ने प्रयोग के तौर पर हाईब्रिड अमरूद की खेती शुरू की। कम लागत, अधिक उत्पादन और बाजार में अच्छी मांग के कारण यह खेती तेजी से लोकप्रिय हो गई और धीरे–धीरे गांव के अधिकांश किसानों ने इसे अपनाना शुरू कर दिया। वर्तमान में गांव के लगभग ''70 प्रतिशत किसान'' अमरूद की खेती कर रहे हैं और करीब ''100 एकड़ क्षेत्र'' में अमरूद के ''70 हजार से अधिक पौधे'' लगाए जा चुके हैं। किसान ''वीएनआर, थाई पिंक और रेड डायमंड'' जैसी उन्नत किस्मों का उत्पादन कर रहे हैं, जिससे उन्हें साल में ''दो बार फसल'' प्राप्त होती है। किसान खेत से ही अमरूद की तुड़ाई और पैकिंग कर सीधे मंडियों और बड़े शहरों, विशेष रूप से ''दिल्ली'' तक भेजते हैं, जिससे उन्हें बेहतर मूल्य प्राप्त होता है और अतिरिक्त मजदूरी खर्च भी कम होता है। इस खेती से गांव के किसानों की ''आय में उल्लेखनीय वृद्धि'' हुई है और उनके जीवन स्तर में भी सुधार आया है। अमरूद की सफल खेती ने न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है बल्कि गांव को एक नई पहचान भी दिलाई है। आज ग्राम इदारतपुरा बागवानी आधारित खेती का एक सफल उदाहरण बनकर अन्य किसानों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया है।

प्रारंभिक स्थिति

खरगोन जिला मुख्यालय से लगभग 17 किलोमीटर दूर स्थित ग्राम इदारतपुरा पहले मुख्य रूप से पारंपरिक खेती पर निर्भर था। यहां के किसान धान, चना, मिर्च और कपास जैसी सामान्य फसलों की खेती करते थे। खेती पूरी तरह पारंपरिक तरीकों से की जाती थी, जिसमें आधुनिक तकनीकों और बागवानी फसलों का प्रयोग बहुत कम होता था। पारंपरिक खेती के कारण उत्पादन सीमित रहता था और किसानों को अपनी मेहनत के अनुरूप लाभ नहीं मिल पाता था। गांव की अधिकांश आबादी कृषि पर निर्भर होने के बावजूद किसानों की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी। सीमित आय और बढ़ती लागत के कारण किसानों को खेती को अधिक लाभकारी बनाने के नए विकल्पों की तलाश थी।

बदलाव की सोच या प्रेरणा कहां से मिली

खेती में बदलाव लाने की प्रेरणा गांव के कुछ प्रगतिशील किसानों के प्रयासों से मिली। वर्ष ''2018–19'' के दौरान गांव के कुछ किसानों ने प्रयोग के तौर पर ''हाईब्रिड अमरूद'' के पौधे लगाए। उन्होंने देखा कि अमरूद की खेती में लागत अपेक्षाकृत कम आती है और उत्पादन अच्छा होने के कारण बाजार में इसकी अच्छी कीमत भी मिलती है। जब इन किसानों को बेहतर लाभ मिलने लगा, तब अन्य किसानों ने भी इस खेती को अपनाने का निर्णय लिया। धीरे–धीरे यह

प्रयोग पूरे गांव में फैल गया और आज स्थिति यह है कि गांव के लगभग ''70 प्रतिशत किसान अमरूद की खेती'' कर रहे हैं। इस बदलाव ने गांव की कृषि व्यवस्था को नई दिशा दी और किसानों में नई आशा और आत्मविश्वास का संचार किया।

अपनाई गई तकनीक या नवाचार

अमरूद की खेती को सफल बनाने के लिए किसानों ने कई आधुनिक तकनीकों और नवाचारों को अपनाया। उन्होंने उन्नत और ''हाईब्रिड किस्मों'' जैसे ''वीएनआर, थाई पिंक और रेड डायमंड'' अमरूद का चयन किया, जो अधिक उत्पादन देने वाली और बाजार में लोकप्रिय किस्में हैं। इसके साथ ही किसानों ने पौधों की वैज्ञानिक दूरी, समय पर सिंचाई, उर्वरक प्रबंधन तथा उचित छंटाई (प्रूनिंग) जैसी आधुनिक बागवानी तकनीकों का उपयोग करना शुरू किया। खेतों में पौधों की देखभाल और रोग–कीट प्रबंधन पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। कई किसान पौधों की बेहतर वृद्धि के लिए जैविक खाद और उन्नत सिंचाई पद्धतियों का भी उपयोग कर रहे हैं। इन तकनीकों के कारण अमरूद का उत्पादन अधिक और गुणवत्ता बेहतर हो रही है।

प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग

अमरूद की खेती को सफल बनाने में किसानों को विभिन्न संस्थाओं से तकनीकी मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। कृषि विभाग, उद्यानिकी विभाग तथा कृषि विशेषज्ञों द्वारा किसानों को बागवानी फसलों की उन्नत तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई। समय–समय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कृषि मेलों के माध्यम से किसानों ने पौधरोपण, पौध प्रबंधन, छंटाई, उर्वरक प्रबंधन और रोग नियंत्रण जैसी तकनीकों को सीखा। इस तकनीकी सहयोग के कारण किसानों को अमरूद की खेती के वैज्ञानिक तरीकों को समझने और उन्हें अपने खेतों में लागू करने में सहायता मिली, जिससे उत्पादन और गुणवत्ता दोनों में सुधार हुआ।

उत्पादन, लागत और आय में बदलाव

हाईब्रिड अमरूद की खेती अपनाने के बाद गांव के किसानों की उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। पारंपरिक फसलों की तुलना में अमरूद की खेती में लागत अपेक्षाकृत कम आती है, जबकि उत्पादन अधिक और बाजार मूल्य बेहतर मिलता है। वर्तमान में गांव के लगभग ''100 से अधिक किसान करीब 100 एकड़ क्षेत्र'' में अमरूद की खेती कर रहे हैं और यहां ''70 हजार से अधिक अमरूद के पौधे'' लगाए जा चुके हैं। अमरूद की फसल वर्ष में ''दो बार'' ली जाती है, जिससे किसानों को साल भर आय का अवसर मिलता है। इस खेती के कारण किसानों की आय में काफी वृद्धि हुई है और उनकी आर्थिक स्थिति पहले की तुलना में अधिक मजबूत हो गई है।

विपणन और मूल्य संवर्धन

ग्राम इदारतपुरा के किसान अपने खेतों से अमरूद तोड़कर वहीं उसकी ''पैकिंग'' करते हैं, जिससे अतिरिक्त मजदूरी का खर्च बच जाता है। इसके बाद अमरूद को स्थानीय व्यापारियों के माध्यम से या सीधे मंडियों तक पहुंचाया जाता है। यहां से यह अमरूद ''दिल्ली सहित कई बड़े शहरों और मंडियों'' तक भेजा जाता है। बेहतर गुणवत्ता और उच्च उत्पादन के कारण इस गांव का अमरूद बाजार में काफी लोकप्रिय हो गया है। हालांकि अभी किसान मुख्य रूप से ताजे फल के रूप में ही अमरूद बेचते हैं, लेकिन भविष्य में इससे जुड़े मूल्य संवर्धन जैसे जूस, जैम या प्रसंस्करण की संभावनाएं भी मौजूद हैं।

सामाजिक एवं पारिवारिक प्रभाव

अमरूद की खेती से प्राप्त आय ने गांव के किसानों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होने से उनके परिवारों का जीवन स्तर भी बेहतर हुआ है। अब किसान अपने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य आवश्यकताओं पर अधिक ध्यान दे पा रहे हैं। गांव में रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं, क्योंकि अमरूद की खेती, तोड़ाई, पैकिंग और परिवहन में स्थानीय लोगों को काम मिलता है। इस सफलता के कारण गांव की पहचान एक प्रगतिशील कृषि क्षेत्र के रूप में बनने लगी है और इससे पूरे जिले का नाम भी रोशन हो रहा है।

सम्मान, पुरस्कार और पहचान

अमरूद की सफल खेती के कारण ग्राम इदारतपुरा को कृषि क्षेत्र में एक नई पहचान मिली है। यह गांव अब जिले में ''अमरूद उत्पादन के प्रमुख केंद्र'' के रूप में जाना जाने लगा है। विभिन्न कृषि कार्यक्रमों और समाचार माध्यमों के माध्यम से इस गांव की सफलता की कहानी सामने आई है, जिससे अन्य किसानों को भी प्रेरणा मिल रही है। गांव के प्रगतिशील किसानों को समय–समय पर कृषि विभाग और स्थानीय प्रशासन द्वारा सम्मानित भी किया गया है, जिससे उनका उत्साह और बढ़ा है।

भविष्य की योजनाएं

भविष्य में गांव के किसान अमरूद की खेती के क्षेत्र को और अधिक बढ़ाने की योजना बना रहे हैं। इसके साथ ही वे अमरूद के ''प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन'' जैसे जूस, पल्प और अन्य उत्पादों के निर्माण की दिशा में भी प्रयास करना चाहते हैं। किसान आधुनिक तकनीकों जैसे ड्रिप सिंचाई, उन्नत पौध प्रबंधन और वैज्ञानिक खेती को और अधिक अपनाने की योजना बना रहे हैं। उनका उद्देश्य अमरूद उत्पादन को एक संगठित और बड़े स्तर के व्यवसाय के रूप में विकसित करना है, जिससे गांव के अधिक से अधिक किसानों को लाभ मिल सके।

अन्य किसानों के लिए संदेश

ग्राम इदारतपुरा के किसान अन्य किसानों को संदेश देते हैं कि खेती में सफलता प्राप्त करने के लिए नई तकनीकों को अपनाना और बागवानी फसलों की ओर ध्यान देना आवश्यक है। यदि किसान पारंपरिक खेती के साथ–साथ फल एवं सब्जी फसलों की खेती करें और वैज्ञानिक तरीके अपनाएं, तो वे कम लागत में अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। किसान यह भी सलाह देते हैं कि समूह बनाकर खेती करने, बाजार से जुड़ने और उन्नत किस्मों का चयन करने से खेती को एक लाभकारी व्यवसाय बनाया जा सकता है। उनकी सफलता यह दर्शाती है कि सही सोच और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से खेती में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है।